इनोवेशन • सरे यूनिवर्सिटी ने 50 हजार घुटनों की एक्स-रे इमेज पर की रिसर्च

एआई अब एक्स-रे तस्वीर बनाकर पहले ही बता देगा घुटनों का 'भविष्य'

भास्कर न्यूज | गिल्डफोर्ड

ऑस्टियोआर्थराइटिस से जूझ रहे करोड़ों मरीजों के लिए राहत की खबर है। यूनिवर्सिटी ऑफ सरे के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा एआई सिस्टम तैयार किया है, जो मरीज के घुटने के भविष्य की एक्स-रे तस्वीर बना सकता है। यह सिस्टम यह भी बताता है कि अगले एक साल में बीमारी कितनी बढ़ सकती है। इससे डॉक्टर और मरीज दोनों को बीमारी की दिशा और गंभीरता का अंदाजा पहले ही लग जाएगा। यह रिसर्च इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन मेडिकल इमेज कंप्यूटिंग एंड कंप्यूटर असिस्टेड इंटरवेंशन (एमआईसीसीएआई 2025) में पेश की गई। इसमें बताया गया है कि यह तकनीक मशीन लर्निंग के जरिए एक रियलिस्टिक 'भविष्य की एक्स-रे' बनाती है। यह एआई सिस्टम 5 हजार मरीजों के 50 हजार घुटनों की एक्स-रे इमेज पर ट्रेन किया गया है। अन्य एआई टूल्स से यह 9 गुना तेज है।

भविष्य का एक्स-रे दिखाकर आगाह करता है

रिसर्च टीम के लीड डेविड बटलर ने बताया, 'अभी तक मेडिकल एआई सिर्फ नंबर या रिस्क बताता था, लेकिन हमारा सिस्टम मरीज को भविष्य की एक्स-रे दिखाता है। आज की और एक साल बाद की एक्स-रे को साथ देखकर मरीज को यह समझ आता है कि इलाज या जीवनशैली में बदलाव क्यों जरूरी है। यह एक बड़ा बदलाव हो सकता है कि हम कैसे मरीजों को बीमारी का खतरा समझाते हैं।'

डॉक्टरों के लिए भी आसान और भरोसेमंद: यह सिस्टम एडवांस्ड डिफ्यूजन मॉडल पर आधारित है, जो भविष्य की एक्स-रे बनाते समय घुटने के 16 अहम पॉइंट्स को हाईलाइट करता है। इससे डॉक्टरों को यह समझने में आसानी होती है कि एआई किन हिस्सों में बदलाव देख रहा है।

स्टडी में दावा : एआई से पढ़ाई आसान, लेकिन इससे नई स्किल्स सीखने की क्षमता पर असर

लंदन | यूके में स्कूल स्टूडेंट्स के बीच एआई के बढ़ते इस्तेमाल को लेकर एक नई रिपोर्ट सामने आई है। इसमें कहा गया है कि स्टूडेंट्स को डर है कि एआई उनकी पढ़ाई की क्षमता को कमजोर कर रहा है। कई स्टूडेंट्स ने कहा कि एआई से स्कूलवर्क बहुत आसान हो गया है, जिससे उनकी रचनात्मकता और नई स्किल्स सीखने की क्षमता पर असर पड़ रहा है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की इस रिपोर्ट के मुताबिक 13 से 18 साल के सिर्फ 2% स्टूडेंट्स ही ऐसे हैं जो स्कूलवर्क में एआई का इस्तेमाल नहीं करते हैं।